यज्ञ विज्ञान

प्रो. रविप्रकाश आर्य
निदेशक, महर्षि दयानन्द सरस्वती पीठ
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत

सारांश

महाभारत काल के पश्चाचात मत-मतान्तरों के द्वारा धर्म अध्यात्म के साथ कर्मकाण्ड सम्बन्धी भ्राँतियाँ भी बहुत फैली! वाम मार्गी लोग यज्ञ के लिए निरपराध प्राणियों को मारने लगे ! कालान्तर में करुणा प्रधान हृदय वाले "महात्मा बुद्ध" , "जैन तीर्थकर भगवान महावीर" आदि ने उन "हिंसक यज्ञों" का विरोध किया! हिंसक यज्ञों के होने से अनेक व्यक्तियों के हृदय में "अग्नि होत्र" के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न हो गई जिसके परिणाम स्वरुप यह सर्व-कल्याणकारी वैदिक परम्परा प्राय: लुप्ती सी हो गई ! "देवी देवताओं" एवं "यज्ञों" के नाम पर हो रहा पशुवध, वेद उद्धारक "महर्षि दयानंदजी" की कृपा से वैदिक विधानानुसार "हिंसा रहित" यज्ञ पुन: होने लगे!

इस युग के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् महर्षि दयानन्द के अनुसार "अग्नि होत्र" से लेकर "अश्व-मेध" पर्यन्तव जो यज्ञ है, उसमें चार प्रकार के द्रव्यों का होम करना होता है! 1. सुगन्ध गुण युक्त - जो 'कस्तुरी', केशर' सुगन्धित गुलाब के फुल आदि, 2. मिष्टगुण युक्त जो कि गुड़ या शक्कर आदि, 3. पुष्टि-कारक जो घृत और जौ, तिल आदि, 4. रोगनाशक जो कि सोमलता, औषधि आदि ! इन चारों का परस्पर शोधन, संस्कार और यथायोग्य मिलाकर 'अग्नि' में "वेद ऋचाओं" द्वारा युक्तिकपूर्वक जो होम किया जाता है। वह वायु और वृष्टिजल की शुद्धि करने वाला होता है !

वे लिखते हैं कि जो (होम) यज्ञ करने के द्रव्य अग्नि में डाले जाते हैं उनसे "धुआँ" और "भाप" उत्पन्न होते है, क्योंकि अग्नि का यही स्वभाव है कि पदार्थो में प्रवेश करके उनको भिन्न -भिन्न कर देता है फिर वे हल्के हो के वायु के साथ ऊपर आकाश में चढ़ जाते हैं ! उनमें जितना जल का अंश है वह भाप कहलाता है और जो शुष्क है वह पृथ्वी का भाग (कार्बन) है ! इन दोनों के योग का नाम "धूम" है ! जब वे परमाणु मेघ मंडल में वायु के आधार से रहते हैं फिर वे परस्पर मिलकर बादल होकर उनसे "वृष्टि", वृष्टि से "औषधि", औषधियों से "अन्न", अन्न से "धातु", और धातु से "शरीर" और शरीर से "कर्म" बनता है !

सुगंध युक्त, "घी" आदि पदार्थों को अन्य 'द्रव्यों में मिलाकर अग्नि में डालने से उनका नाश नहीं होता है वस्तुतः किसी भी पदार्थ का नाश नहीं होता केवल वियोग मात्र होता है और यज्ञ में "वेद मंत्र" द्वारा दी हुई आहूति में उस पदार्थ की शक्ति 100 गुना बढ़ जाती है !

वृष्टि > औषधि > अन्न >धातु> शरीर> कर्म

जम्बूद्वीप *the e-Journal of Indic Studies*
Volume 1, Issue 1, 2022, p. 89-95, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

आकाशीय बिजली में अग्नि का गुण होता है ! हार्प वायुमंडल / बदलो के इस चार्ज को बदल देता है ! विकरण और अग्नि के गुण अलग होते है ! इस देश में कही कही बरसात का पानी बिना बिजली के भी गिर रहा है जिसके जल के गुण बदल जाते है ! शुद्ध जल और वायु के द्वारा अन्नादि औषधि भी अत्यंत शुद्ध होती है!

अगर वायमण्डल में अग्नि नही होगी फिर बरसात का पानी फलों / सब्जियों और वनस्पति की गुणवत्ता को भी प्रभावित करता है ! वातावरण की अग्नि को "वैदिक यज्ञ" से भी उत्पन्न किया जा सकता है बस यज्ञ की विधि सही हो !

"यज्ञ" से पर्यावरण शुद्ध होता है, वर्षा होती है और हमारा अंत:करण भी पवित्र होता है ! यह विज्ञान द्वारा सिद्ध है इस कारण से यज्ञ केवल हिन्दुओं के लिए ही नहीं किन्तु विश्व के प्रत्येक मानव के लिए, चाहे वह हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, यहुदी और पारसी आदि हो , सबके लिए अनिवार्य है !

विस्तार

यज्ञ विज्ञान लाखों वर्षो से चला आ रहा है। इस यज्ञ का सम्बन्ध किस धर्म-पंथ से नही है। यज्ञ करने से वातावरण प्रदूषण रहित होता है तथा इसमें पढे जाने वाले मंत्रो का सम्बन्ध किसी धर्म विशेष में नहीं होता है। इन मंत्रो में सम्पूर्ण विश्व की कामना की गयी है, हमारे शरीर, अन्य जीवधारियों आदि को स्वस्थ रखने की प्रार्थना की गयी है। इन मंत्रों द्वारा हमारे शरीर के अन्दर मन आत्मा की शुद्धि होती है, शरीर अच्छे कार्यो की तरफ चलता है, यह वैज्ञानिक प्रमाणिकता है। संस्कृत में मंत्र होने का कारण यह है कि जब यज्ञ मंत्रों की खोज की गयी, रचे गये तब सम्पूर्ण विश्व में संस्कृत भाषा ही थी तथा दूसरे इन मंत्रों में संक्षिप्त रूप में विस्तृत अर्थ, रहस्य छिपे हुए है। कुछ व्यक्ति विशेष यज्ञ को सनातन धर्म से जोड़कर देखते हैं लेकिन यदि यज्ञ के बारे में जानकार से पूछे तो पता चलेगा कि यह एक विज्ञान है जो विभिन्न रूपों में हमें लाभ पहुँचाता है। मुस्लिम समाज के फकीर सूफी भी यज्ञ रूपी धूमी जलाते हैं तथा घर-घर जाकर जानवरों, बच्चो, जवान, बूढो को सूंघाते हैं।

समिधा में सबसे महत्वपूर्ण गौ या गौ-वंश का सूखा गोबर-उपले आते हैं। सभी चिकित्सा-पद्धतियाँ गाय के गोबर के औषधि-गुणों का समर्थन करती है। विश्व के सभी देशों की प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों में रोग-निवारण के लिए गाय के गोबर का प्रयोग किया जाता है। गाय के गोबर में मेन्थॉल, अमोनिया, फिनॉल, इन्डॉल, नाइट्रोजन (0.32 प्रतिशत) फॉस्फोरिक अम्ल (0.21 प्रतिशत), तथा पोटाश (0.16 प्रतिशत) पाए जाते हैं।

इटली के वैज्ञानिक डॉ बिगेड की खोज है कि गाय के ताजे गोबर की गंध मात्र से ज्वर तथा मलेरिया की जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। 'न्यूयार्क टाइम्स' के अनुसार, ''पोषण आहार पर पली गाय के गोबर से कीटाणुनाशक शक्ति अन्य नहीं है।'' गाय के गोबर से लिपीपुती वस्तुएं तथा घर की दीवारें अणु-विस्फोट के घातक विकिरणों की रोकथाम करती हैं तथा अन्तरिक्षयान में उत्पन्न होने वाली भीषण गर्मी को गाय का गोबर दूर करता है- यह रूसी वैज्ञानिकों की खोज है। गाय के गोबर के सूखे चूरे का धूम्रपान कराकर दमा का रोग ठीक करने में पश्चिम-देशों के डॉक्टर रूचि ले रहे हैं स्वतः सिद्ध है कि गाय के गोबर से बने उपलों में और उसके जलने से उत्पन्न धुएं में औषधि-तत्व विद्यमान रहते हैं।

©Indira Gandhi National Open University

भैंस या किसी अन्य पशु के घृत या वनस्पति-घी को यज्ञ में प्रयुक्त करने से वायु-प्रदूषण बढता है, जबकि गोघृत के प्रयोग से वायु-प्रदूषण दूर होता है। इसलिए, अथर्ववेद (2/13/1) ने शुद्ध (गो) घृत को यज्ञाग्नि में डालकर यज्ञ करने से आयु-प्राप्ति की बात कही है।

गोघृत में कौन-कौन से पदार्थ होते है? यह अभी पूर्णतः स्पष्ट नहीं हुआ है। अब तक की खोजों के अनुसार, गोघृत में ग्यारह अम्ल, बारह धातुएं, दो लैक्टोज तथा चार गैसीय पदार्थ होते हैं।

गाय के घी को चावलों में मिश्रित करके, मन्त्रोच्चारणपूर्वक जब अग्निहोत्र में आहुति दी जाती है, तब उस आहुति के जलने से उत्पन्न चार गैसें अभी तक पहचानी जा चुकी है। वे हैं: 1. एथिलीन ऑक्साइड, 2. प्रापिलीन ऑक्साइड, 3. फार्मल्डिहाइड तथा 4. बीटा-प्रोपियोलोक्टोन। गोघृत के ज्वलन से उत्पन्न इन गैसों में कई रोगों को तथा मन के तनावों को दूर करने की अद्भुत क्षमता है।

यज्ञ करने के लिए चाहे पृथ्वी में गड्ढा खोदा जाए, चाहे लोहा-तांबा आदि किसी धातु के पात्र का प्रयोग किया जाए, किन्तु प्रयोग दशा में पात्र के आन्तरिक भाग की एक विशेष आकृति होती है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार, हवनकुण्ड की ऊपरी सिरे की लम्बाई (= चौड़ाई) सोलह अंगुल, नीचे (पेंदी) की लम्बाई (= चौड़ाई) चार अंगुल तथा गहराई सोलह अंगुल होती है (चित्र 1)। हवनकुण्ड को छोटा या बड़ा बनाने में, इसकी ऊपरी निचली सतहों तथा गहराई का अनुपात यही रखा जाता है। महाभारत-काल के पश्चात, वैदिक कर्मकाण्डों में कुछ दोष आ गए। वाम-मार्ग, तन्त्रविद्या तथा पशु-हिंसा-प्रधान यज्ञों ने हवनकुण्ड के आकारों में भी परिवर्तन कर दिया।

मनोहर माधव जी पोतदार द्वारा लिखित 'अग्निहोत्र' नामक पुस्तक में पिरेमिडी छत्रक (फ्रस्टम ऑफ ए पिरेमिड) आकार के हवनकुण्ड का प्रतिपादन किया गया है। इसके अनुसार, इस आकार का यज्ञकुण्ड मिट्टी या किसी धातु का बनाया जा सकता है। वर्ग-पिरेमिडी-छत्रक आकार का तांबे का बना हवनकुण्ड सर्वोतम पाया गया है। आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोगों की कसौटी पर भी यह खरा उतरा है। यूनान में पाये जाने वाले पिरामिड हवन कुण्ड के उल्टे होते हैं। पिरामिड अपने आप में विज्ञान लिये हुए हैं जिनके उपर बहुत से वैज्ञानिकों ने खोजे की तथा पाया कि पिरामिड के अन्दर धनात्मक तरंगो का संचरण होता है।

यज्ञ में मंत्रो का शुद्ध व लयबद्ध प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण होता है। विभिन्न मंत्रो का प्रकृति में विभिन्न प्रभाव पड़ता है तथा मंत्रों की ध्वनि तरंगें वायु मण्डल में ऊपर तक जाती हैं। अग्निहोत्र के मंत्र सूर्य से आने वाली प्रकाशरूपी किरणों का ध्वनिमय सार हैं। इन मंत्रों के उच्चारण से उस शुद्धिकारक शक्ति का प्रस्फुटन सम्भव है। मन्त्रों के अशुद्ध उच्चारण से अभीष्ट ध्वनि-कम्पन उत्पन्न नहीं हो पाती। परिणामतः मन्त्रों के लाभ से वक्ता वंचित रह जाते हैं।

जहां तक ध्वनि का प्रश्न है, ध्वनि कम्पनों के अच्छे बुरे परिणामों को वैज्ञानिक जानते हैं। उदाहरणार्थ- संगीत सुनकर गायें अधिक दूध देती हैं तथा पेड़-पौधों की वृद्धि की दर बढ़ जाती है। ध्वनि चिकित्सा (वाइब्रेशन थिरैपी) का गुण कैसे है?

©Indira Gandhi National Open University

यज्ञ द्वारा वातावरण में अनुकूल एवं पोषक तत्व प्रसारित करते समय मन्त्रोच्चारण द्वारा आस-पास के वायुमण्डल में सूक्ष्म ध्वनि-कम्पन प्रसारित किये जाते हैं और आहुति दी जाती है। आहुति के ज्वलन से उत्पन्न ज्वाला के लाल-नीले-पीले रंगों से भी यज्ञ-मन्त्रों का अद्भुत सामंजस्य है और इस प्रकार इन मन्त्रों में रंग-चिकित्सा के गुण भी अन्तर्भूत है। यज्ञ के मन्त्रों का उच्चारण करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि मन्त्रों को न तो होठों-ही-होठों में बुदबुदाया जाता है और न ही उसकी गर्जना की जाती है। प्रत्येक मन्त्र के निश्चित स्वर (तीव्रता तथा आवृत्ति) के साथ ही उसका उच्चारण किया जाता है। मल्हार-राग से वर्षा का होना तथा दीपक-राग से दीपकों का जल जाना आदि उदाहरण इतिहास में उपलब्ध हैं। मन्त्र के साथ स्वर और लय का महत्व स्पष्ट है। इस दृष्टि से यज्ञ में मन्त्रोच्चारण के समय आजकल प्रयुक्त होने वाला ध्वनि विस्तारक (लाउड स्पीकर) ध्वनि तरंगों की तीव्रता को बदल देने के कारण, मन्त्र-ध्वनि की दृष्टि से, उपयुक्त नहीं है।

अथर्ववेद (12/5/56) में कहा है कि ''जो मनुष्य वैदिक रीति के विरूद्ध चलकर अग्निहोत्र, वेदाध्ययन आदि छल से करना चाहता है, उससे उसकी इष्ट सिद्धि नहीं होती।

प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों के साथ मानवीय शारीरिक क्रियाओं का सुर मिलाने के लिए प्रकाश का अंधकार के सन्धिकाल- प्रातः काल- सूर्योदय तथा सांयकाल- सूर्यास्त के समय, यज्ञ विशेष फलदायी होता है। अतः प्रातः-सायं यज्ञ करने का विधान है। इससे प्रदूषित पर्यावरण शुद्ध होता है।

यज्ञ द्वारा उत्पन्न गैसें तथा वातावरण शरीर को प्राकृतिक अवस्था में लौटाने में बहुत सहायक होते हैं। भारत में यद्यपि यह एक सामान्य घटना है किन्तु विदेशों में, विशेषतः अमेरिका में, इसको काय-चिकित्सा की एक पृथक पद्धति मानकर एक अलग नाम 'होमा-थिरैपी' दे दिया गया है। हठयोग में अष्ट-चक्रों का अपना महत्व है। यज्ञ से इन 'चक्रों' पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

यौगिक क्रियाओं के लिए अग्निहोत्र अत्यावश्यक है, क्योंकि इससे वायुमण्डल शुद्ध होता है और 'प्राण' (जीवन-ऊर्जा) वायुमण्डल पर निर्भर है। 'प्राण' और 'मन' एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यह सभी का एक सामान्य अनुभव है कि अग्निहोत्र का वायुमण्डल ध्यान लगाते समय मन को एकाग्र करने में सहायक होता है।

शिकागो (इलिनॉय) में मई 1985 में हुई 'सेवन कण्टिनैण्ट हाडसर्स ग्रुप स्प्रिंग कन्वेन्शन' (यूएस सत्संग, 13, 5, जुलाई, 1985) में बोलते हुए श्री जेरी होजिज ने कहा कि ''मैंने यज्ञ को जब पहली बार किया तो आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त हुए। मन को इतनी शान्ति प्रतीत हुई कि तीन मिनट में ही मन एकाग्र होकर ध्यान लग गया, जबकि इस अवस्था में पहुंचने में साधारणतः एक घंटा लग जाता है।'' स्पष्ट है कि यज्ञ मन तथा शरीर के तनावों को दूर करता हैं, जिससे अनेक रोग दूर होते है। पाश्चात्य की अपेक्षा भारतीय विचारधारा से प्रभावित प्राकृतिक चिकित्सालयों में आज जल, मिट्टी, यौगिक आसनों के साथ अग्निहोत्र का भी प्रयोग हो रहा है।

अमेरिका के एक मनोवैज्ञानिक श्री बैरी राथनेर ने पूरे विश्वविद्यालय में 'अग्निहोत्र का मानसिक तनाव पर प्रभाव' नामक विषय पर शोध किया है। उन्होनें बताया है कि इस घरेलू चिकित्सा से बच्चों का मिरगी रोग जाता रहा है और मानसिक रूप से अविकसित बच्चों की बुद्धि विकसित हो जाती है।

©Indira Gandhi National Open University

जीव-विज्ञान के कुछ सूक्ष्मदर्शियों का दावा है कि यज्ञ के धूम्र (धुंए) में शरीर के भीतर जाने से उसके सूक्ष्म तन्तुओं पर प्रभाव पड़ता है। यज्ञ के धूम्र (धुऐ) के सामने रहने से रक्त में निहित 'सुगर प्लेटों' के विस्तार में कमी हो जाती है।

बम्बई के जीवाणु-वैज्ञानिक श्री ए जी मोण्डकर ने, यज्ञ से वायुमण्डल का जीवाणु संख्या पर क्या प्रभाव होता है, इसके लिए सन् 1982 में कुछ वैज्ञानिक प्रयोग किये।

यज्ञ पर प्रयोग डॉ बी आर गुप्ता, ऐसोसिएट प्रोफेसर, कानपुर (उ.प्र.) ने किया। उन्होनें देखा कि जिस आवासीय कॉलोनी में यज्ञ नहीं होता है। उसमें वायुमण्डलीय रोगाणु-गणनांक एक सौ तेईस था, जबकि जिस कॉलोनी में नियमित अग्निहोत्र होता रहता था उसका रोगाणु-गणनांक मात्र पच्चीस था। स्पष्ट है कि यज्ञ से वायुमण्डलीय रोगाणु निष्क्रिय हो जाते हैं।

यज्ञ करते समय शरीर के रन्ध्र खुल जाते हैं और अग्निहोत्र से उठने वाली वाष्प चर्म में प्रविष्ट होकर, शरीर को आरोग्यता प्रदान करती है।

यज्ञ-राख को शरीर पर मलने से त्वचा कोमल तथा चमकीली बनती है। यज्ञ-चिकित्सा में प्रविष्ट होने पर, रोगी, किसी चिकित्सक आदि पर आश्रित न होकर, अपनी चिकित्सा स्वयं करने लगता है। इस प्रकार प्राकृतिक चिकित्सा में यज्ञ का महत्वपूर्ण स्थान है। यज्ञ के बिना प्राकृतिक चिकित्सा अधूरी है।

डॉ मोण्डकर ने खुजली के रोगी खरगोशों पर यज्ञ की राख का गोघृत में बना मल्हम लगाने पर देखा कि वे केवल तीन दिन में ही ठीक हो गए (यूएस सत्संग, 9, 120, 1982) जबकि ऐलोफेल में 8 दिन लगे। इसकी राख में भी प्रतिरोधी (ऐण्टिसेप्टिक) गुण होने से रोगाणुनाशक गुण है, जिससे जख्म आदि को ठीक किया जा सकता है।

पश्चिमी जर्मनी के मोनिका जेह्ले नामक एक औषधि-रसायनज्ञ ने प्रयोगों के आधार पर सिद्ध किया है कि अनेक रोगों को यज्ञ तथा यज्ञ-राख द्वारा ठीक किया जा सकता है। उसने इस चिकित्सा-पद्धति को होम-चिकित्सा (होम-थिरैपी) नाम दिया है। उसके द्वारा किए गए अन्वेषण 'यूएस सत्संग' (11/7) नामक मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुए हैं, जिनका फरवरी, 1985 (12/18-12) में पुनर्मुद्रण हुआ है। उनके निष्कर्ष का सारांश निम्नवत् है:

जर्मनी के वैज्ञानिकों ने गायों पर कुछ प्रयोग किये थे। यज्ञ-राख का मल्हम और क्रीम लगाने से परिसर्प (हर्पीज) का प्रकोप रूक गया था। एक गाय के टखने में पर्याप्त दिनों से सूजन और दर्द की शिकायत चल रही थी। होम-चिकित्सा से गाय तीन दिनों से सीधी खड़ी हो गई और एक सप्ताह में बिलकुल स्वस्थ हो गई। थन का सूजन भी यज्ञ-मल्हम से ठीक हुआ।

©Indira Gandhi National Open University

भारत तथा आयरलैण्ड में यज्ञ के द्वारा चूहों के प्रकोप की समस्या हल हुई थी। पशुओं के पिस्सू तथा किलनी भी इसके प्रयोग से छूट जाते हैं। दस्त की शिकायत में, जर्मनी में, केवल एक ही दिन गाय के आहार में यज्ञ-राख मिलने से वह पूरा दूध देने लगी।

गौशाला में यज्ञ करने से गायें बहुत प्रसन्न होती हैं। एक महीने तक इस प्रयोग को चलाने से दूध और मलाई दोनों की मात्रा में वृद्धि होती हुई पाई गई है। ''जलती हुई शक्कर के धुएँ में वायु शुद्ध करने की बड़ी शक्ति है। इससे विषूचिका, क्षय तथा चेचक आदि का विष शीघ्र ही दूर हो जाता है'' ..... प्रोफेसर ट्रिलबर्ट (फ्रांस)

''मुनक्का, किशमिश तथा छुआरे आदि सूखे फलों को हमने जलाकर देखा है। हमें ज्ञात हुआ कि उनके धुएँ से मियादी ज्वर के कीटाणु आधे घंटे में और दूसरे रोगों के दो घंटे में मर जाते हैं।'' ..... डॉ ऐम ट्रेल्ट

''घी-चावल में केशर मिलाकर जलाने से रोग के कृमियों का नाश होता है।''
..... डॉ कर्नल किंग, सेक्रेटरी कमिशनर (तमिलनाडू)

''यह ठीक है कि आर्यो द्वारा किये जाने वाले यज्ञ से बादल बनते थे और उनसे वर्षा हुआ करती थी।''
..... हिस्दुस्तान टाइम्स, 9 अगस्त 1952 में एक भारतीय वैज्ञानिक का कथन

प्लेग के टीके के आविष्कारक डॉ हैफकिन (फ्रांस) ने लिखा है कि ''अग्नि में गोघृत का हवन रोगाणुओं का विनाश होता है।''

मनोवैज्ञानिक श्री गुलेचा का एक प्रयोग शराब (सुरा) की आदत वाले व्यक्ति पर था। पश्चिमी जगत् में यह धारणा है कि शराब के सेवन को कम तो किया जा सकता है किन्तु इससे पूरी तरह मुक्त नहीं हुआ जा सकता। श्री गुलेचा का निम्नलिखित प्रयोग इस धारणा को निर्मूल सिद्ध करने मे सक्षम है। श्री गुलेचा का यह प्रयोग ''अग्निहोत्र-इन दि ट्रीट्मैण्ट ऑफ ऐल्कोहॉलिज़्म'' नाम के शोध-लेख के रूप में, जनवरी 1989 में कलकत्ता में हुए 'इण्डियन साइकियाट्रिक ऐसोसिएशन' के इकतालिसवें वार्षिक अधिवेशन में प्रस्तुत किया गया था। इस शोध का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है:

अट्ठारह मद्यपों पर यज्ञ का प्रयोग किया गया। कम्प्यूटरीकृत ईईजी का अध्ययन किया गया। दो सप्ताह के नियमित यज्ञ से उनमें शराब पीने की इच्छा समाप्त हो गई। यज्ञ करना छोड़ने पर कुछ सप्ताह तक उसकी अवस्था ठीक रही, किन्तु उसके पश्चात उनमें शराब पीने की इच्छा पुनः जाग्रत हो गई। इस प्रकार, दो सप्ताह के यज्ञ के अभ्यास से उनको दुर्व्यसन से पूर्णतः मुक्ति नहीं मिली। अतः शराब पीने के दुर्व्यसन से पूर्णतः मुक्ति पाने के लिए यज्ञ को नियमित रूप से प्रतिदिन करना, शराब की आदत छुड़ाने में, एक महत्वपूर्ण अंग है।

उपर्युक्त प्रयोग पर मनन करने से पता लगता है कि यज्ञ करने से मन की सद्वृत्तियाँ जागृत होती हैं, जो व्यक्ति को शराब, सुल्फा, गांजा, भांग, अफीम, स्मैक तथा तम्बाकू आदि के सेवन से विमुख करती है। अतः दुर्व्यसनों के निवारण में यज्ञ एक अमोघ अस्त्र है।

©Indira Gandhi National Open University

यज्ञ के प्रदूषण-शमन-गुण की व्याख्या श्री फ्लैनेगन ने इस प्रकार की है- ''गोघृत तथा गो-खाद के कोलॉयडी अणु वायु के प्रदूषकों को झपटकर, उनसे संयोग करके, अहानिकारक कण बना लेते हैं, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार की फिटकरी आदि को जल में डालने से जल की अनिर्मलता को दूर करने वाले पदार्थो का स्कन्दन (कोएगुलेशन) होने से जल निर्मल हो जाता है। नीचे बैठने वाले ये अणु (कण) मृत्तिका को क्षारीयता प्रदान करते हैं, और यदि ये कण किसी पौधे की पत्तियों पर बैठ जाते हैं तो ये उसे समयानुसार पोषण देने वाले स्रोत बन जाते हैं। यह सब इसलिए होता है कि भौतिक दृष्टि से गोघृत तथा गोखाद से उत्पन्न धुआं विद्युतावेशित होता है।''

इस प्रकार के प्रयोगों से निष्कर्ष निकाला गया कि मानवों तथा पौधों पर यज्ञ का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यज्ञ से होने वाले लाभों से प्रभावित होकर, संसार के चार देशों- यूएसए, चिली, पोलैण्ड तथा जर्मनी में यज्ञ पर अनुसन्धान-कार्य तथा इसका प्रचार निरन्तर बढ़ रहा है।

1984 में भोपाल शहर में मिक गैस रिसाव हुआ जिसमें हजारों लोग मारे गये लेकिन जिन घरों में प्रतिदिन यज्ञ होता था वो लोग सुरक्षित पाये गये। वैज्ञानिकों ने यन्त्रों की सहायता से पता लगाया कि इन घरों में मिक गैस का असर शून्य था। बीजों को सुरक्षित रखने में, बीजों को शीघ्र मिट्टी में पौधा बनाने में यज्ञ राख श्रेष्ठ है। यज्ञ दैवीय प्रवृति को प्रबल करता है तथा राक्षसय प्रवृति पर नियंत्रण रखता है, योग शक्तियों को बढ़ाता है।

पर्यावरण शुद्धि के लिये हमें यज्ञ भी करना चाहिए तथा पौधे भी लगाने चाहिए। विशेष अवसरों जैसे जन्मदिन, शादी आदि पर एक पौधा यज्ञ के यजमान से अवश्य लगवायें। जिस घर में कोई बीमारी आ जाये उन्हें यज्ञ अवश्य कराना चाहिए तथा वैद्य या यज्ञ विशेषज्ञ पण्डित या आर्य समाज के पुरोहित को बीमारी बताकर हवन कुण्ड तथा सामग्री प्रकार का चयन कर लेना चाहिए।

©Indira Gandhi National Open University